दिनांक :- 17-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ. फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- 11th (अधिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- द्वितीय

अध्याय :- शहरीकरण का महत्व

शहर और नगर बड़ी संख्या में लोगों के रहने के ही स्थान नहीं होते थे जब किसी अर्थव्यवस्था में खाद्य उत्पादन के अतिरिक्त अन्य आर्थिक गतिविधियाँ विकसित होने लगती है तब किसी एक स्थान पर जनसंख्या का घनत्व बढ़ जाता है। इसके फलस्वरूप कस्बे बसने लगते हैं। ऐसी परिस्थिति में लोगों का कस्बों में इकट्ठा रहना उसके लिए फायदेमंद सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner

विशेषतः इसलिए क्योंकि बाहरी अर्थव्यवस्थाओं में खाद्य उत्पादन के अलावा व्यापार उत्पादन और तरह-तरह की सेवाओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। नगर के लोग आत्मनिर्भर नहीं रहते और उन्हें नगर या गाँव के अन्य लोगों द्वारा उपन्न वस्तुओं या दी जाने वाली सेवाओं के लिए एक पत्थर की मुद्रा बनाने वाले को पत्थर उकेरने के लिए काँसे के औजारों की जरूरत पड़ती है। वह स्वयं ऐसे औजार नहीं बना सकता है वह यह भी नहीं जानता कि मुद्राओं के लिए आवश्यक रंगीन पत्थर वह कहाँ से प्राप्त करे। उसकी विशेषज्ञता तो सिर्फ नक्काशी यानी पत्थर उकेरने तक ही सीमित होती है, वह व्यापार करना नहीं जानता। काँसे और औजार बनाने वाले भी लकड़ी के कोयले धातु-ताँबा या राँगा (टिन) लाने के लिए खुद बाहर नहीं जाता साथ ही, उसे ईंधन के लिए हरदम

लकड़ी के कोयले की जरूरत रहती है। इस प्रकार श्रम विभाजन (Division of Labour) शहरी जीवन की विशेषता है। इसके अलावा, शहरी अर्थव्यवस्था में एक सामाजिक संगठन का होना भी जरूरी है। शहरी विनिर्माताओं के लिए ईंधन, धातु, विभिन्न प्रकार के पत्थर, लकड़ी आदि जरूरी चीजें भिन्न-भिन्न जगहों से आती हैं जिनके लिए संगठित व्यापार और भंडारण की भी आवश्यकता होती है। शहरों में अनाज और अन्य खाद्य-पदार्थ गाँवों से आते हैं और उनके संग्रह तथा वितरण के लिए व्यवस्था करनी होती है। इसके अलावा और भी अनेक प्रकार के क्रियाकलापों में तालमेल बैठाना पड़ता है: मुद्रा कटाने वालों को केवल पत्थर ही नहीं, उन्हें तराशने के लिए औजार और बर्तन भी चाहिए। इसके अलावा, शहरी अर्थव्यवस्था को अपना हिसाब

किताब लिखित रूप में रचना होता है।

3000 ई० पू० उरूक नगर में स्त्री का यह सिर एक सफेद संगमरमर को तराशकर बनाया गया था इसकी आँखों और भौंहों में क्रमशः नीले लाजवर्द (Lapis lazuli) तथा सफेद सीपी और काले डामर (Bitumment) की जुड़ाई की गई होगी। सिर के ऊपर एक खाँचा बना हुआ है जो शायद गहना पहनने के लिए बनाया गया था यह मूर्तिकला का एक विश्व-प्रसिद्ध नमूना है। इसके मुख, ठेड़ी और गालों की सुकोमल-सुंदर बनावट के लिए इसकी प्रशंसा की जाती है। यह एक ऐसे कठोर पत्थर में तराशा गया है जिसे काफी अधिक दूरी से लाया पड़ा होगा

पत्थर लाने से लेकर इस मूर्ति के निर्माण में और किन विशेषज्ञों का योगदान रहा होगा। उनकी सूची बनाइए।

शहरों में मल की आवाजाही

मेसोपोटामिया के खाद्य-संसाधन चाहे कितने भी समृद्ध रहे हो, उसके यहां खनिज-संसाधनो का अभाव था। दक्षिण के अधिकांश भागो में औजार मोहरे (मुद्राएँ) और आभूषण बनाने के लिए पत्थरो की कमी थी। इराकी खजूर और पोपलार के पेड़ो की लकड़ी, गाड़ियाँ गाड़ियो के पहिए यानादि बनाने के लिए कोई खास अच्छी नही थी: और औजार, पात्र, या गहने बनाने के लिए कोई धातु वहाँ उपलब्ध नही थी। इसलिए हमारे विचार से प्राचीन काल के मेसोपोटामिया लोग संभवतः लकड़ी, ताँबा, राँगा, चाँदी, सोना सीपी और विभिन्न प्रकार के पत्थरो को तुर्की और ईरान अथवा खाड़ी पार के देशो से मंगाते थे जिसके लिए वह अपना कपड़ा और कृषि-जन्य उत्पाद काफी मात्रा में उन्हे निर्यात करते थे। इन देशो के पास खनिज संसाधनो की

कोई कमी नहीं थी, मगर वहाँ खेती करने की बहुत कम गुंजाईश थी। इन वस्तुओं का नियमित रूप से आयात-प्रदान तभी संभव होता जबकि उसके लिए कोई सामाजिक संगठन से जो विदेशी अभियानों और विनियमों को निर्देशित करने में सक्षम हो। दक्षिणी मेसोपोटामिया के लोगों ने ऐसे संगठन स्थापित करने की शुरुआत की। शिल्प, व्यापार और सेवाओं के अलावा कृशल, परिवहन व्यवस्था भी शहरी विकास लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारवाही पशुओं की पीठ पर रखकर या बैलगड़ियों में डालकर शहरों में अनाज या काठ कोयला लाना-ले-जाना बहुत कठिन होता है क्योंकि उससे बहुत ज्यादा समय लगता है और पशुओं के चारे आदि पर भी काफी खर्च आता है। शहरी अर्थव्यवस्था इसका बोझ उठाने के लिए सक्षम नहीं होती है।

इसलिए परिवहन का सबसे सस्ता तरीका सर्वत्र जल मार्ग ही होता है। अनाज के बोरो से लदी हुई नावे या बजरे नदी की धारा अथवा हवा के वेग से चलते है- जिसमे कोई खर्चा नही लगता, जबकि जानवरो से माल की ढुलाई की जाए तो उन्हे चारा खिलाना पड़ता पुराने मेसोपोटामिया की नहरे और प्राकृतिक जल धाराए छोटी - बड़ी बस्तियो के बीच माल के परिवहन का अच्छा मार्ग थी। और आगे इसी अध्याय मे मारी नगर का जो विवरण दिया गया है उसे पढने से यह स्पष्ट हो जाएगा कि फरात नदी उन दिनो व्यापार के लिए विश्व मार्ग के रूप मे कितनी अधिक महत्वपूर्ण थी। लेखन कला का विकास

सभी समाजो के पास अपनी एक भाषा होती है जिस मे उच्चरित ध्वनियाँ अपना अर्थ प्रकट करती है

Scanned with CamScanner